किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का सामुद्रिकशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 नीरज कुमार जोशी
सहायकाचार्य
मानविकी विद्याशाखा, संस्कृत विभाग,
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

प्रस्तावना:- महाकवि भारवि द्वारा प्रणीत किरातार्जुनीयम् संस्कृत महाकाव्यों में बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित प्रथम महाकाव्य है। इस महाकाव्य में ज्योतिषशास्त्र संबद्ध विविध विषयों की चर्चा विशद् रूप में मिलती है। उसमें भी इस महाकाव्य के अन्तर्गत महाकवि द्वारा सामुद्रिकशास्त्र विषयक विशिष्ट स्थिति पर चर्चा महाकवि ने प्रसंगानुसार की है। महाकाव्य में कथा प्रसंग के नायक अर्जुन ने किरात वेशधारी (किराताधिपति) भगवान् शंकर के साथ परस्पर युद्ध किया, तदुपरान्त अर्जुन के पराक्रम से प्रसन्न होकर भगवान् ने अपना प्रमुख अस्त्र पशुपतास्त्र वरदान स्वरूप उसे प्रदान किया। उक्त घटनाक्रम को महाकवि द्वारा विभिन्न स्थानों में दिव्य चरित्र संबद्ध कथा प्रसगों के वर्णन रूपों में मिलता है, उन कथांशों के अन्तर्गत ही विभिन्न स्थानों में मनुष्य के विभिन्न शरीरागों की आकृति का ज्ञान सामुद्रिकशास्त्रानुगत करते हुए उनके शुभाशुभ विचारों का वर्णन ज्योतिष के सन्दर्भों में प्रस्तुत किया है।

मुख्यशब्द:- बृहत्त्रयी, सामुद्रिकशास्त्रीयसिद्धान्त, महाकाव्य, सामुद्रिक, शरीराकृति, समुद्राचार्य, प्रतिबिम्ब, काव्यस्रष्टा, देह सौन्दर्य, महापुरुषों, सौन्दर्य ।

किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का सामुद्रिकशास्त्रीय अध्ययन—

ज्योतिषशास्त्र का एक महत्वपूर्ण अंग सामुद्रिकशास्त्र भी है। महाकवि ने प्रस्तुत महाकाव्य में अनेक स्थानों पर सामुद्रिक विद्या विषयक चर्चा की है। सामुद्रिकशास्त्र मनुष्य के शरीर विभिन्न अंग-उपांग एवं उनमें विद्यमान चिह्नों या लक्षणों को देखकर शुभाशुभ फल का विवेचन करने वाला शास्त्र है। सामुद्रिक शब्द की निष्पत्ति समुद्र +ठञ् से होती है। इस विद्या को समुद्र ने गर्गाचार्य ऋषि को बताया था, इसलिए इसे सामुद्रिक विद्या कहते हैं-

रामायोक्ता मया नीतिः स्त्रीणं राजन्! नृपां वदे।

लक्षणयत् समुद्रेण गर्ग योक्तं यथा पुरा।।[1]

सामुद्रिक विद्या के माध्यम से मनुष्य के हाथ, पैर, ललाट, सिर तथा अन्य शरीरागों में स्थित चिह्नों एवं रेखाओं आदि से मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन के बारे में विचार किया जाता है। भारवि कृत किरातार्जुनीयम् में मुख्य रूप से हस्तरेखा विषय तथा पाद रेखा विषय का चिन्तन विशिष्ट रूप में दिखता है। महाकाव्य के तृतीय सर्ग में पाण्डवों के समक्ष उपस्थित महर्षि वेदव्यास के शरीराग् सौष्ठव को निम्नलिखित शब्दों में महाकवि भारवि ने प्रस्तुत किया-

ततः शरच्चन्द्रकराभिरामैरुत्सार्पिभिः प्रांशुमिवांशुजालैः।

©Indira Gandhi National Open University

बिभ्राणमानीलरुचं पिशंगीर्जटास्तडित्वन्तमिवाम्बुवाहम्।।[2]

प्रस्तुत पद्य में महर्षि वेदव्यास को शरद ऋतु के चन्द्रमा की किरणों के समान मनोहर कान्ति युक्त, उर्ध्व प्रसरणकारी तेज समूह से उन्नत (डील डौल में बड़े), पीत वर्ण की जटाओं से युक्त तथा मेघ के समान वर्णित किया है। इस प्रकार वेदव्यास के विशेषणों के माध्यम से उनके महापुरुषत्व को निर्दिष्ट किया गया है।

सामुद्रिक विद्या में महापुरुषों के लक्षणों में तेज समूह को विशेष रूप से महत्व दिया गया है। सामुद्रिकशास्त्र में विभिन्न पुरुषों के विभिन्न उन्मानों का वर्णन आता है। वराहमिहिर विरचित बृहत्संहिता में इस प्रकार लिखा है-

अष्टशतं षण्णवतिः परिमाणं चतुरशीतिरिति पुंसाम्।

उत्तमसमहीनानामङ्गुलसंख्या स्वमानेन।।[3]

सामुद्रिकशास्त्र में कान्तिप्रभा का आश्रय लेकर पुरुषों के स्वभाव की चर्चा विस्तार से की गयी है। सामुद्रिकशास्त्र नामक ग्रन्थ में पं0 शक्तिधर शुक्ल ने शरीर मण्डल की छाया का शुभाशुभ फल निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया है-

छाया शुभाशुभफलानि निवेदयन्ती

लक्ष्या मनुष्यपशुपक्षिषु लक्षणज्ञैः।

तेजरेगुणान्बहिरपि प्रविकाशयन्ती

दीपप्रभा स्फटिकरत्नघटस्थितैव।।[4]

अर्थात् महर्षि के शरीर कान्तिप्रभा चन्द्रमा की किरणों के समान मनोहर शुभाशुभ फल निवेदित करने वाली है। पूर्व पद्य में उद्धृत महर्षि वेदव्यास की स्निग्धता को सामुद्रिकशास्त्र नामक ग्रन्थ में निम्नलिखित रूप में विवेचित किया गया है-

स्निग्धा द्विजत्वङ्नखरोमकेशच्छाया सुगन्धा च महीसमुत्था।

तुष्ट्यर्थलाभाभ्युदयान्करोति धर्मस्य चाहन्यहनि प्रवृत्तिम्।।

स्निग्धा सिताच्छहरितानयनाभिरामा-

सौभाग्यमार्दवसुखाभ्युदयान्करोति।

सर्वार्थसिद्धिजननी जननीव च चाप्या-

छाया फलं तनुभृतां शुभमादधाति।।[5]

अर्थात् यदि किसी के शरीर की शोभा चिकनी, सफेद, साफ, सुगन्धित तथा नयनाभिराम हो तो उसके ऊपर भूमि की छाया जाननी चाहिए। यह सौभाग्य, कोमलता, सुख, ऐश्वर्य और माता के समान समग्र अर्थों की सिद्धि देती है। शरीर कान्ति के विषय में वराहमिहिर विरचित बृहत्संहिता में इस प्रकार वर्णित है-

द्युतिमान् वर्णस्निग्धः क्षितिपानां मध्यमः सुतार्थवताम्।

रूक्षो धनहीनानां शुद्धः शुभदो न संकीर्णः।।[5]

यदि शरीर की शोभा प्रचण्ड, भयजनक, कमल, स्वर्ण अथवा अग्नि के समान होती है तो उसे अग्नि की छाया जानना चाहिए। वह जय दात्री है तथा शीघ्र ही वाञ्छित अर्थ की सिद्धि देती है।

यहाँ पूर्व में उद्धृत वेदव्यास के शरीर का रग् नीला है, इस विशेषण से वेदव्यास के कृष्ण वर्ण का परिचय मिलता है। प्राचीन शास्त्रों में कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास का यह विशेषण प्रसिद्ध था। यहाँ **'आनीलरूच'** इस विशेषण से द्युतिमान वर्ण का ज्ञान होता है, इस द्युतिमान वर्ण को सामुद्रिकशास्त्रकारों ने पृथ्वीपालों के लिए प्रयुक्त किया है-

स्थूलास्थिरस्थिसारो बलवान् विद्यान्तगः सुरूपश्च।

बहुगुरुशुक्राः सुभगा विद्वांसो रूपवन्तश्च।।[7]

अर्थात् तेजस्वी और स्निग्ध वर्ण वाले पृथ्वीपाल होते हैं, जिनका वर्ण मध्यम हो, वे पुत्रवान और धनवान होते हैं। जिनका वर्ण रुखा हो, वे निर्धन होते हैं। शुभ स्निग्ध वर्ण, शुभ्र और मिश्रित वर्ण अशुभ होता है। इस प्रसंग में त्वचा स्निग्धता आदि विषयों पर भी सामुद्रिक विवेचन किया है, जैसे बृहत्संहिता में प्रकाशित है-

स्निग्धत्वक्का धनिनो मृदुभिः सुभगा विचक्षणास्तनुभिः।

मज्जामेदःसाराः सुशरीराः पुत्रवित्तयुक्ताः।।[8]

प्रस्तुत पद्य में बहुधा शब्दों में जिन तत्त्वों की चर्चा सामुद्रिक विद्या विशारदों द्वारा की गयी है, उन्हीं तत्त्वों को आनीलरूच इस स्वरूप अक्षर के द्वारा महाकवि भारवि ने महाकाव्य में प्रस्तुत किया है। यहाँ पूर्व उद्धृत पद्य में महाकवि भारवि ने वेदव्यास की जटाओं को पीत वर्ण का बताया है। उसके द्वारा ही महर्षि वेदव्यास के महापुरुषत्व का परिचय मिलता है, जैसे बृहत्संहिता में केश लक्षण प्रसग् में वराहमिहिर ने चर्चा की है-

एकैकभवैः स्निग्धैः कृष्णैराकुञ्चितैरभिन्नाग्रैः।

मृदुभिर्न चातिबहुभिः केशैः सुखभाग्नरेन्द्रो वा।।[9]

इसी प्रकार अन्य सामुद्राचार्यों ने भी प्रकाशित किया है-

एकैकसम्भवाः स्निग्धाः कृष्णा नातिघनाः कचाः।

पूजिता विपरताश्च निर्धानानां प्रकीर्त्तिताः।।[10]

©Indira Gandhi National Open University

इसी सर्ग के अग्रिम पद्य में महाकवि भारवि ने महर्षि वेदव्यास के गुण गौरव की चर्चा निम्न पद्य में प्रस्तुत की है-

प्रसादलक्ष्मीं दधतं समग्रां वपु:प्रकर्षेण जनातिगेन।

प्रसह्य चेत:सु समासजन्तमसंस्तुतानामपि भावमार्द्रम्।।[11]

इस पद्य में सामुद्रिक विद्या विवेचन के अनुसार वेदव्यास शरीर की स्थूलता में सबसे उत्कृष्ट दिखाई देते हैं। इसके पश्चात् वेदव्यास के वाणी माधुर्य को सामुद्रिक विद्या के अनुसार प्रकाशित किया है-

अनुद्धताकारतया विविक्तां तन्वन्तमन्त:करणस्य वृत्तिम्।

माधुर्यविस्रम्भविशेषभाजा कृतोपसंभाषमिवेक्षितेन।।[12]

किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के षष्ठ सर्ग में महाकवि भारवि द्वारा अर्जुन के शरीर सौन्दर्य और उसमें निहित गुणों का वर्णन इस प्रकार से किया गया है-

रुचिराकृति: कनकसानुमथो परम:पुमानिव पतिं पतताम्।

धृतसत्पथस्त्रिपथगामभित: स तमारुरोह पुरुहूतसुत:।।[13]

अर्थात् यक्ष के चले जाने पर इन्द्रनील पर्वत के समीप पहुँचकर सुन्दर शरीर धारी तथा सन्मार्गानुवर्ती अर्जुन ने भगवती, भागीरथी के सामने से सम्पूर्ण शिखर से युक्त इन्द्रनील पर्वत पर आरोहण किया, जिस तरह विष्णु भगवान् अपने पक्षिराज गरुड़ पर आरूढ़ होते हैं। इसी सर्ग में अर्जुन के शरीर सौन्दर्य की चर्चा महाकवि भारवि ने सामुद्रिक विद्या विषयक विशेषज्ञता का आश्रय लेकर की है, जैसे-वनेचरों की उक्ति के माध्यम से अर्जुन की विशाल भुजाओं की चर्चा निम्नलिखित रूप में की है-

स बिभर्ति भीषणभुजगभुज: पृथु विद्विषां भयविधायि धनु:।

अमलेन तस्य धृतसच्चरिताश्चरितेन चातिशयिता मुनय:।।[14]

इस पद्य में महाकवि भारवि ने अर्जुन की भुजाओं को भीषण भुजगों के सदृश प्रस्तुत किया है, उससे उनके विशाल बाहु और पुष्टकन्धों का परिचय मिलता है। सामुद्रिकशास्त्र में महापुरुष लक्षण विवेचन प्रसग् में विशाल भुजाओं को निम्न रूप से चर्चित किया है-

करिकरसदृशौ वृत्तावाजान्तवलम्बिनौ समौ पीनौ।

बाहू पृथिवीशानामधनानां रोमशौ ह्रस्वौ।।[15]

इसी प्रकार के भाव अन्य सामुद्राचार्यों के भी है-

षण्डस्कन्धो गजस्कन्ध: कदलीस्कन्ध एव च।

©Indira Gandhi National Open University

सर्वे ते पार्थिवाः ज्ञेयाः महाभोगमहाधनाः।।[16]

किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में महाकवि ने देव कन्याओं का वर्णन करते हुए उनके आकार की चर्चा को सामुद्रिक विद्या विचारों के अनुरूप प्रस्तुत किया। अष्टम सर्ग में वन प्रदेश की शोभा तथा नदियों व लताओं के सौन्दर्य को महाकवि ने निम्न श्लोकों द्वारा प्रस्तुत किया है-

समुन्नतैः काशदुकूलशालिभिः परिक्वणत्सारसपंक्तिमेखलैः।

प्रतीरदेशैः स्वकलत्रचारुभिर्विभूषिताः कुञ्जसमुद्रयोषितः।।

विदूरपातेन भिदामुपेयुषश्च्युताः प्रवाहादभितः प्रसारिणः।

प्रियांक शीताः शुचिमौक्ति कत्विषो वनप्रहाला इव वारिबिन्दवः।।

सखीजनं प्रेम गुरूकृतादरं निरीक्षमाणा इव नम्रमूर्तयः।

स्थिरद्विरेफाञ्जनशारितोदरैर्विसारिभिः पुष्पविलोचनैर्लताः।।

उपेयुषीणां बृहतीरधित्यका मनांसि जव्ः सुरराजयोषिताम्।

कपोलकाषैः करिणां मदारुणैरुपाहितश्यामरुचश्च चन्दनाः।।[17]

प्रस्तुत पद्यों में विविध अलंकारों का प्रयोग करते हुए महाकवि भारवि ने नदी तट को नितम्बिन्यों के नितम्ब के समान तथा सरिता के प्रभाव द्वारा जो जलकण इधर-उधर फैल रहे हैं, उनको दन्त पंक्तियों के सदृश व कान्ति लताओं को पुष्पों से तथा इन्द्रकील पर्वत के विस्तीर्ण आकार का वर्णन किया है।

इस प्रकार महाकाव्य में कवि ने नारी के विभिन्न अगों को सामुद्रिकशास्त्रनुसार विवेचित किया है। स्त्रियों के विभिन्न अगों के सौन्दर्य का विवेचन करते हुए महाकवि भारवि ने देव कन्याओं की विलासिता का वर्णन किया है-

कलत्रभारेण विलोलनीविना गलद्दुकूलस्तनशालिनोरसा।

बलिव्यपायस्टरोमराजिना निरायतत्वादुदरेण ताम्यता।।

विलम्बमानाकुलकेशपाशया कयाचिदाविष्कृतबाहुमूलया।

तरुप्रसूनान्यपदिश्य सादरं मनोधिनाथस्य मनः समाददे।।[18]

उपरोक्त पद्यों में देवाग्नाओं के नितम्ब भार से उनकी नीवी अर्थात् (वस्त्र ग्रन्थि) ढीली पड़ गई है, तथा उनके कृश उदर पर त्रिवली के न रहने से रोमराजि के स्पष्ट दर्शन हो रहे हैं। पीठ से कटिपर्यन्त लटके हुए घँघराले केशों से वक्ष प्रदेश को खोल रखने के कारण भी अपने प्रियतम के मन को आकृष्ट कर रही हैं। इस प्रकार के वर्णन में स्त्रियों के नितम्ब, स्तन, वक्षस्थल, कटिप्रदेश, उदर, रोमराज्यादि एवं स्त्री के केशों की कुटिलता की चर्चा की गई है। उपरोक्त पद्यों में सामुद्रिक विद्या के अनुसार नारी शरीर

©Indira Gandhi National Open University

सौन्दर्य का वर्णन मिलता है। इसी सर्ग के अग्रिम पद्यों में स्त्री शरीरांग सौन्दर्य की चर्चा में प्रवीण महाकवि भारवि ने सुराग्नाओं के विलासत्व को निम्न शब्दों में प्रस्तुत किया है-

वरोरुभिर्वारणहस्तपीवरैश्चिराय खिन्नान्नवपल्लवश्रियः।

समेऽपि यातु चरणाननीश्वरान्मदादिव प्रस्खलतः पदे पदे।।

विसारिकाञ्चीयीमणिरश्मिलब्धया मनोहरोच्छ्रायनितम्बशोभया।

स्थितानि जित्वा नवसैकतद्युतिं श्रमातिरिक्तैर्जघनानि गौरवैः।।

समुच्छ्वसत्पंकजकोशकोमलैरुपाहितश्रीण्युपनीवि नाभिभिः।

दधन्ति मध्येषु वलीविभङ्गिषु स्तनातिभारादुदराणि नम्रताम्।।

समानकान्तीनि तुषारभूषणैः सरोरुहैरस्फुटपत्रपंङक्तिभिः।

चितानि धर्माम्बुकणैः समन्ततो मुखान्यनुत्फल्लविलोचनानि च।।

विनिर्यतीनां गुरुखेदमन्थरं सुराग्नानामनुसानु वर्त्मनः।

सविस्मयं रूपयतो नभश्चरान् विवेश तत्पूर्वमिवेक्षणादरः।।[19]

उक्त पद्यों में वर्णित अप्सराओं के अंग-प्रत्यगों का वर्णन सामुद्रिकशास्त्राभिमत मिलता है। किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के दशम सर्ग में वर्णित है कि अर्जुन के पदचिह्नों को देखकर नीलपर्वत में उपस्थित देवाग्नाओं ने अर्जुन की स्थिति को जान लिया। देवेन्द्र की आराधना के लिए वेदव्यास के निर्देशानुसार तपस्या करते हुए अर्जुन के पदचिह्नों का वर्णन निम्नलिखित रूप में प्राप्त होता है-

सचकितमिव विस्मयाकुलाभिः

शुचिसिकतास्वतिमानुषाणि ताभिः।

क्षितिषु ददृशिरे पदानि जिष्णो-

रुपहितकेतुरथाग्लाञ्छनानि।।[20]

इस पद्य में देवाग्नाओं द्वारा दृष्ट अर्जुन के पाद चिह्नों में ध्वजा और रेखा अंकित है। यह प्रथम विशेषण है तथा द्वितीय विशेषण के रूप में फ्अतिमानुषणिय् शब्द आया है अर्थात् उस अर्जुन के पैरों में ध्वजाकार रेखा तथा चक्राकार रेखा दोनों हैं।

सामुद्रिकशास्त्र विशारदों ने सामुद्रिक विद्या में हस्तरेखा विचार के साथ-साथ पाद रेखा विचार को भी प्रधानता से प्रस्तुत किया है। सामुद्रिकशास्त्र नामक ग्रन्थ में पं0 शक्तिधर शुक्ल ने पाद रेखा विषय में इस प्रकार लिखा है-

यस्य पादतले पद्मं चक्रं वाप्यथ तोरणम्।

अंकुश कुलिशं वापि स राजा भवति ध्रुवम्।।

यस्य वृद्धाङ्गुलेर्मूलात्पदे रेखा च दृश्यते।

स राज्यं लभते नूनं भुङ्क्ते निष्कण्टकां महीम्।।

असमं मूलदेशे तु वज्रं यस्य हि दृश्यते।

अविच्छिनं पदं चैव कुलश्रेष्ठो भवेन्नरः।।

अपरं पर्वरेखायां राज्यन्नञ्च परिकीर्तितम्।।[21]

अर्थात् जिसके पाद में पद्म, चक्र, तोरण, अंकुश और वज्र का निशान हो वह निश्चय ही राजा होता है तथा जिसके पैर में ऊर्ध्व रेखा अँगूठे के मूल से चलकर पादतलपर्यन्त में फैली दिखे, वह निश्चय ही राज्य सुख पाता है। पादमूल में असमानाकार तथा अविच्छिन्न वज्र का चिह्न हो, वह अपने वंश में प्रधान तथा पैरों के पोरों की रेखाओं के बीच दूसरी रेखा हो तो उसे निश्चित राज्य सुख मिलता है।

इस प्रकार से सामुद्रिकशास्त्र में उक्त पाद रेखाफल विचार को महाकवि भारवि ने अर्जुन के पाद चिह्नों के समान प्रकाशित किया है जिससे अर्जुन के शत्रुओं की पराजय व अर्जुन को राज्य की प्राप्ति को स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है। इसी सर्ग के अग्रिम पद्य में महाकवि भारवि ने कथानायक अर्जुन के अमानवीय शरीर का विवेचन इस प्रकार से किया है-

अतिशयितवनान्तरद्युतीनां फलकुसुमावचयेऽपि तद्विधानाम्।

ऋतुरिव तरुवीरुधां समृद्धया युवतिजनैर्जगृहे मुनिप्रभावः।।[22]

प्रस्तुत पद्य में ध्वजा, चक्राकार रेखायुक्त अर्जुन के पैरों के माध्यम से उसके महापुरुषत्व की चर्चा की गई है अर्थात् उस महापुरुष के सानिध्य के कारण वन प्रदेश के वृक्ष लताओं, फल-फूलों में भी समृद्धि प्राप्त हो रही है।

किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में महाकवि भारवि ने किरात् वेशधारी शिव तथा अर्जुन के महासंग्राम को विवेचित किया है। यहाँ अर्जुन का कथानायकत्व जैसा दिखता है, वैसा ही किरात् वेशधारी शिव का भी कथा नायकत्व मिलता है।

महाकाव्य में कथानायक अर्जुन तथा किरातवेशधारी शिव की प्रशंसा मिलती है, उन किरात् वेशधारी शिव के प्रसाद से अर्जुन ने अपने लक्ष्य को प्राप्त किया। महाकाव्य में कथानायक अर्जुन तथा किरात् वेशधारी शिव की प्रशंसा मिलती है, उन किरात् वेशधारी शिव के भी शरीरादि अग् विषयों की चर्चा कुछ-कुछ स्थानों पर मिलती है। जैसे-अर्जुन संग्राम वर्णन प्रसग् में सोलहवें सर्ग में किरातराज रूप में उपस्थित शिव के शरीरादि की अग् पुष्टता का वर्णन भारवि ने इस प्रकार किया है-

अस्त्राववष्टब्धनतौ समाधिः शिरोधरायाः रहितप्रयासः।

धृता विकारांस्त्यजता मुखेन प्रसादलक्ष्मीः शशलाञ्छनस्य।।[23]

©Indira Gandhi National Open University

प्रस्तुत पद्य में किरातराज के कंधे अविचल और झुके हुए हैं। ग्रीवा भी संस्थान विशेष से अविचल है। इस प्रकार सामुद्रिकविद्या विशारदों ने स्कन्धों की पुष्टता को बहुधा प्रकाशित किया है। जैसे-वराहमिहिर विरचित बृहत्संहिता में महापुरुषों के लक्षण निर्देश प्रसग् में स्कन्ध लक्षण को इस प्रकार से प्रकाशित किया है-

विपुलावव्युच्छिनौ सुश्लिष्टौ सौख्यवीर्यवताम्।।[24]

इसी प्रकार अन्य समुद्राचार्यों ने भी प्रकाशित किया है-

कदलीस्तम्भसटाशा अजस्कन्धाश्चयेनरा:

राजानस्ते विजानीयुर्महाकोशा महाबला:

निर्मांसरोम बहुला निर्धनस्य प्रकीर्तिता:।।[25]

महाकवि भारवि ने इस पद्य में किरात् वेशधारी शिव के शरीरागें की पुष्टता का वर्णन करते हुए मुखमण्डल की प्रभा को चन्द्रमा की शोभा के सदृश प्रस्तुत किया है।

सामुद्रिकशास्त्र में मुखमण्डल की कान्ति की चर्चा सामुद्रिक विद्या विशेषज्ञों ने बहुधा की है, जैसे-बृहत्संहिता में प्रस्तुत किया गया है-

वक्त्रं सौम्यं संवृतममलं श्लक्ष्णं समं च भूपानाम्।

विपरीतं क्लेशभुजां महामुखं दुर्भगाणां च।।[26]

अर्थात् जिनका मुख सुन्दर कान्ति युक्त, गोल व कोमल तथा समानाकार होता है, वह राजा होता है। इसी प्रकार सामुद्रिक आचार्यों ने भी कहा है-

सौम्यं च संवृतं वक्त्रममलंयस्य देहिन:।

महाराजो भवेन्नित्यं विपरीते तु निर्धन:।।[27]

इस सुन्दर मुखमण्डल वाले जातक को **सम्पूर्ण भोगिनां कान्तम्**[28] अर्थात् (जो पुरूष सुन्दर कान्ति मान मुखमण्डल वाला होता है वह सम्पूर्ण भोगों को भोगता है) कहा गया है। इसी प्रकार अन्य समुद्राचार्यों का भी मत है-

यन्मुखं मांसलं स्निग्धं प्रियदर्शनम्।

वर्णाढयं सन्धिविश्लिष्टमजस्र सुखभागिनाम्।।[29]

प्रस्तुत पद्य में महाकवि भारवि ने किराताधिपति भगवान् शिव की स्कन्धपुष्टता, मुखमण्डल शोभा के साथ-साथ उनके ग्रीवा की भी चर्चा की है। उनके इस ग्रीवा वर्णन द्वारा ही शिव की बाणप्रक्षेपण की निपुणता का पता चलता है। सामुद्रिकशास्त्र में

©Indira Gandhi National Open University

ग्रीवा के विभिन्न प्रकारों को मनुष्य के प्रकृति सूचक के रूप में निर्दिष्ट किया है। ग्रीवा लक्षण को बृहत्संहिता में इस प्रकार कहा गया है-

चिपिटग्रीवो निः स्वः शुष्का सशिरा च यस्य वा ग्रीवा।

महिषग्रीवाः शूरः शस्त्रान्तो वृषसमग्रीवः।।[30]

अर्थात् जिनकी ग्रीवा महिष सदृश तथा वृष सदृश सुस्थिर और परिपुष्ट हो, तो वे महापुरुष राजा के समान होते हैं तथा ष्कम्बुग्रीवो राजाय् (अर्थात् शंख के समान ग्रीवा वाला राजा ही होता है।) इसी प्रकार समुद्राचार्यों का भी मत प्रसिद्ध है-

ग्रीवा च वर्तुला यस्य स नरो धनवान् स्मृतः।

कम्बुग्रीवा नरा ये तु राजानस्ते न संशयः।।

निस्वस्तु चिपिटग्रीवः शुष्कग्रीवस्तथैव च।

शूरस्तु महिषग्रीवः शङ्डान्तो वृषकन्धरः।।[31]

प्रस्तुत महाकाव्य में शिव ग्रीवा स्थिर है। उसके द्वारा महिष ग्रीवत्व तथा शूरत्व का पता चलता है। यद्यपि महाकाव्य में भगवान शिव व अर्जुन के साथ परस्पर युद्ध का वर्णन किया है। फिर भी उनके पराक्रम को देखते हुए कथा प्रसग् के अनुकूल विचारों को लेकर कवि भारवि नें सामुद्रिकशास्त्र के अनुसार उनके शरीराग् सौन्दर्य को प्रस्तुत किया।

इस प्रकार महाकाव्य में किराताधिपति शिव तथा कथानायक अर्जुन के विभिन्न शरीरांग सौन्दर्य वर्णन में उनके महापुरुषत्व को सामुद्रिकशास्त्रनुसार प्रस्तुत किया है। नाम, निर्देश रहित सुराग्नाओं की चर्चा तथा उनके शरीर सौन्दर्य का विवेचन यथा प्रसंगानुसार किया है। इस वर्णन को स्त्री सौन्दर्य वर्णन के रूप में जाना जाता है, जो सामुद्रिकशास्त्रनुसार ही है। इस प्रकार महाकाव्य के अन्तर्गत आने वाले कथा प्रसगें के वर्णनों में सामुद्रिकशास्त्र सम्बद्ध विषय की चर्चा मिलती है।

निष्कर्षः- किरातार्जुनीयम् में सामुद्रिकशास्त्र सम्बन्धी विवरणों को महाकवि भारवि ने वेदव्यास की जटा कान्ति, देहस्निग्धता, वाणी माधुर्य, देह सौन्दर्य, आजानुबाहु, पुष्ट स्कन्ध, देह विपुलता, महापुरुषों का स्वरूप, कर-चरणों में अंकित ध्वजा-चक्रांकित रेखाएँ, कम्बू ग्रीवा, निर्मल मुखाकृति दर्शन व नारी सौन्दर्य वर्णन में कृशोदरित्व, उदरभाग की त्रिवली व रोमराजि, नीवी वर्णन व कटि पर्यन्त झलकती हुई अलकावली आदि का वर्णन, करते हुए परिपक्व सामुद्रिकशास्त्रीय ज्ञान का परिचय दिया है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची:-

1- अग्निपुराण 243/2

2- किरातार्जुनीयम् 3/1

3- बृहत्संहिता पृ0-437

4- सामुद्रिकशास्त्र पृ0-25

5- सामुद्रिकशास्त्र पृ0-25

6- बृहत्संहिता पृ0-436

7- सामुद्रिकशास्त्र पृ0-29

8- बृहत्संहिता पृ0-436

9- बृहत्संहिता पृ0-432

10- बृहत्संहिता पृ0-432

11- किरातार्जुनीयम् 3/2

12- किरातार्जुनीयम् 3/3

13- किरातार्जुनीयम् 6/1

14- किरातार्जुनीयम् 6/32

15- बृहत्संहिता पृ0-424

16- बृहत्संहिता पृ0-424

17- किरातार्जुनीयम् 8/9-12

18- किरातार्जुनीयम 8/17-18

19- किरातार्जुनीयम् 8/22-26

20- किरातार्जुनीयम् 10/7

21- सामुद्रिकशास्त्र पृ0-89

22- किरातार्जुनीयम् 10/8

23- किरातार्जुनीयम् 16/21

24- बृहत्संहिता पृ0-34

25- बृहत्संहिता पृ0-423

26- बृहत्संहिता पृ0-427

27- बृहत्संहिता पृ0-427

28- सामुद्रिकशास्त्र पृ0-61

29- बृहत्संहिता पृ0 428

30- बृहत्संहिता पृ0-423

31- बृहत्संहिता पृ0-423

सहायक-सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची:-

1. नैषधीयचरितम् श्रीहर्ष, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, सन्-1973
2. नैषधीयचरितम्, 'जीवातु टीका' मल्लिनाथ, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, तृतीय संस्करण, सन्-2010
3. नैषधीयचरितम्, 'नारायणीटीका', श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, खेतावाड़ी-07, सम्वत्, 1984
4. भारतीय ज्योतिष, डॉ0 नेमीचन्द्र शास्त्री, उत्तरप्रदेश प्रकाशन, लखनऊ, सन्-1976
5. बृहद्दैवरंजनम्, ज्योतिर्विद् गयादत्त आत्मज प0 रामदीन खेमराज, श्री कृष्णदास प्रकाशन, बम्बई, सन्- 1994
6. मानसागरी, 'जयन्ती टीका' विजयकान्त शास्त्री, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, सन्-2003
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा विद्या प्रकाशन, वाराणसी, सन्- 2012
8. बृहत्संहिता, वराहमिहिर, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, सन्-1997
9. सामुद्रिक रहस्य, डॉ0 शुकदेव चतुर्वेदी, प्राच्य प्रकाशन जगत् गञ्ज, वाराणसी, सन्-1985
10. सामुद्रिक रहस्य, प0 श्री कालिकाप्रसाद शर्मा, ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार, वाराणसी, सन्-2010
11. सामुद्रिक रहस्य, डॉ0 देवीप्रसाद त्रिपाठी, भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी, सन्-2001
12. सारावली, श्रीकल्याण वर्मा, व्या0 मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, सन्-1988
13. मुहूर्तचिन्तामणि, रामदैवज्ञ, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, 2001
14. मुहूर्तचिन्तामणि, 'पीयूषधारा टीका' गोविन्द, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, सन्-2001
15. भद्रबाहुसंहिता, डॉ नेमिचन्द्र शास्त्री,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,नई दिल्ली,सन्-2013

©Indira Gandhi National Open University